

Untitled

श्रीगोपाल विलासिनी वलयसद्
रत्नादि मुग्धकृति
श्रीराधापति पाद पद्म भजना-
नन्दाब्धिमग्नो निशम्
लोके सत्कविराज राज इति यह
ख्यातोदयाम्बोनिधिहिः
तं वन्दे जयदेव सद्गुरु वरम्
पद्मावती वल्लभम्

कलियुगान्त भावि कल्किरूप सजल
जलदाभनिजशोभ पङ्कजनाभ ॥ १० ॥

३. गीतगोविन्दम् अष्टपदि गीतम्

श्री जयदेव कवि विरचिता

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदम् ।
विहितवहित्र चरित्रमखेदम् ॥
केशव धृतमीनशरीर जय जगदीश हरे ॥ १ ॥

क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे ।
धरणिधरणकिण चक्रगरिष्ठे ॥
केशव धृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे ॥ २ ॥

वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना ।
शशिनि कळङ्कलेव निमग्ना ॥
केशव धृतसूकररूप जय जगदीश हरे ॥ ३ ॥

तव करकमलवरे नखमद्भुतशृङ्गम् ।
दलितहिरण्यकशिपुतनुभृङ्गम् ॥
केशव धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे ॥ ४ ॥

छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन ।

पदनखनीरजनितजनपावन ॥

केशव धृतवामनरूप जय जगदीश हरे ॥ ५ ॥

क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापम् ।

स्रपयसि पयसि शमितभवतापम् ॥

केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे ॥ ६ ॥

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयम् ।

दशमुखमौलिबलिं रमणीयम् ॥

केशव धृतरामशरीर जय जगदीश हरे ॥ ७ ॥

वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभम् ।

हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम् ॥

केशव धृतहलधररूप जय जगदीश हरे ॥ ८ ॥

निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातम् ।

सदयहृदयदर्शितपशुघातम् ॥

केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे ॥ ९ ॥

म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम् ।

धूमकेतुमिव किमपि करालम् ॥

केशव धृतकल्कशरीर जय जगदीश हरे ॥ १० ॥

श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारम् ।

शृणु सुखदं शुभदं भवसारम् ॥

केशव धृतदशविधरूप जय जगदीश हरे ॥ ११ ॥